'बालभाव'में रेखांकित चित्र (भाग १)

अनुक्रमणिका

१. श्रीमती उमाकी साधकोंद्वारा अनुभूत आध्यात्मिक गुणविशेषताएं १९

१ अ. व्यष्टि साधनाके लिए आवश्यक गुणविशेषताएं १९

१ आ. समष्टि साधनाके लिए आवश्यक गुणविशेषताएं २१

१ इ. प्रौढ अवस्थाकी एक अच्छी साधिका एवं बाल्यावस्थाकी साधिकाका सुंदर संगम हैं श्रीमती उमा अक्का ! २२

१ ई. श्रीमती उमा अक्कामें क्षात्रभाव, बालभाव, वात्सल्यभाव जैसे सभी भाव हैं, इसलिए 'ईश्वरीय राज्यकी स्थापना कैसे होगी ?' इस चिंतासे मुक्त होनेके विषयमें प.पू. डॉक्टरजीका कहना २३

२. श्रीमती उमा रविचंद्रन्‌के बालभावके चित्र बनानेकी प्रक्रियाद्वारा स्वयं उन्हें तथा सनातनकी अन्य साधिकाओंको सीखनेके लिए मिले सूत्र एवं हुई अनुभूतियां २३

३. श्रीमती उमा रविचंद्रन्‌द्वारा बनाए व्यष्टि एवं समष्टि भाव दर्शानेवाले चित्र तथा उन चित्रोंकी विशेषताएं ३७

३ अ. भगवान श्रीकृष्णसहित दिनचर्या ३७

३ अ १. श्रीकृष्णद्वारा नवजात अर्भकका स्वागत करना ३७

३ अ २. श्रीकृष्णका साधिकाको दहीभात खिलाना ४०

३ अ ३. श्रीकृष्णके पीतांबरको पकडकर उनके कंधोंपर सोना ४१

३ अ ४. श्रीकृष्णद्वारा साधिकाको बालगोपीसमान सजाना ४२

३ अ ५. श्रीकृष्णकी गोदमें बैठकर झूलना ४४

३ अ ६. यमुना नदीमें श्रीकृष्णके साथ जलक्रीडा करना ४६

३ अ ७. भगवान श्रीकृष्णके साथ नृत्य करना ४८

३ अ ८. श्रीकृष्णके साथ लुकाछिपी खेलना ४९

३ अ ९. बालसाधिकाके रूठनेपर श्रीकृष्णका उसे मनाना ५१

३ आ. साधनासंबंधी कृत्य / प्रसंग ५२

३ आ १. भगवान श्रीकृष्णका मुरुगादेवताको दुग्धाभिषेक करना ५२

३ आ २. भगवानके चरणोंमें अर्पित चित्ररूप प्रार्थनाएं ! ५५
३ आ ३. मानसपूजा करना ५७
३ आ ४. प.पू. डॉक्टरजीके समक्ष आत्मनिवेदन करना ५९
३ आ ५. साधिकाका श्रीकृष्णसे क्षमायाचना करना ६०
३ आ ६. श्रीकृष्णका मर्दन (मालिश) करना ६२
३ आ ७. साधिकाका वात्सल्यभाव व्यक्त होनेवाले कृत्य ! ६४
३ आ ८. लेटे हुए श्रीकृष्णके चरण दबाना ६७
३ आ ९. श्रीकृष्णके चरणोंको दृढतासे पकडे रहना ६८
३ आ १०. साधिकाका वात्सल्यभाव व्यक्त होनेवाले कृत्य ! ७०
३ आ ११. सनातनकी गोपियोंका दास्यभक्ति करना ७२
३ आ १२. साधिकाके उद्धार हेतु श्रीकृष्णका बालरूपमें आना ७५
३ आ १३. श्रीकृष्णका सबको संसारके भवसागरसे पार लगाना ७७
३ आ १४. श्रीकृष्णद्वारा प्रक्रियाकी पाठशालामें प्रवेश दिलवाना ७८
३ आ १५. पू. सत्यवानजीके हस्तों सत्कार होनेपर बनाया चित्र ८०
३ आ १६. श्रीमती उमाद्वारा साधना आरंभ करनेके पूर्व तथा साधना आरंभ करनेके उपरांतकी स्थिति दर्शानेवाला चित्र ८२

भूमिका

दैनिक जीवनमें हमें प्रतिक्षण अपने अस्तित्वका भान रहता है; क्योंकि वह हमारी वृत्तिके मूलतक बसा होता है । इस भानके अनुरूप ही हम सभी कर्म करते हैं अथवा हमें अनुभव होते हैं । 'ईश्वर अथवा गुरुके अस्तित्वके किसी भी स्वरूपका उत्कटतासे भान होना तथा उसी भानके कारण जीवनके कर्म करना और उस भानकी पृष्ठभूमिपर जीवन अनुभव करना', इसे 'ईश्वर अथवा गुरुके प्रति भाव होना' अथवा 'उनसे आंतरिक सान्निध्य रखना', कहते हैं ।

ईश्वरके प्रति विभिन्न प्रकारके भाव रख सकते हैं, उदा. मां यशोदाका वात्सल्यभाव, हनुमानजीका दास्यभाव, अर्जुनका सख्यभाव इत्यादि । 'बालभाव' भी इसीका एक रूप है । इसमें साधकके मनमें किसी बालककी भांति निरीहता (मासूमियत) एवं निर्मलता रहती है । उसके मनमें ऐसा भाव उत्पन्न होता है, 'मैं ईश्वरका छोटा बालक हूं । ईश्वर ही मेरे माता, पिता, बंधु, सखा एवं सर्वस्व हैं । वे ही मेरी रक्षा करेंगे ।' सनातन संस्थाकी चेन्नई (तमिलनाडु) निवासी साधिका श्रीमती उमा रविचंद्रन् (उमा अक्का) के मनमें भगवान श्रीकृष्णके प्रति ऐसा ही बालभाव जागृत हो गया है । इस भावस्थितिमें उन्हें लगने लगा कि 'मैं ३ वर्षकी बालिका हूं ।' इस भावावस्थामें उन्होंने अनेक चित्र बनाए । ये चित्र देखकर पाठक यह अनुभव कर पाएंगे कि 'बालभाव कैसा होता है ।'

श्रीमती उमा रविचंद्रन् (उमा अक्का) की विशेषताएं

१. श्रीमती उमा रविचंद्रन्ने चित्रकलाकी शिक्षा प्राप्त किए बिना ही भगवान श्रीकृष्णके अत्यंत भावभीने (भावसे ओतप्रोत) चित्र बनाए हैं । साधना बढनेपर साधकमें ईश्वरके प्रति भाव भी बढता है । यह भाव जिस कलाद्वारा उत्कटतासे व्यक्त हो सकता है, उस साधकमें ईश्वर ही वह कला विकसित करते हैं । इस कलाद्वारा अन्योंको आनंद मिलता है और उनके भी भाव जागृत होते हैं ।
श्रीमती उमाद्वारा बनाए बालभावके चित्र भी ऐसे ही हैं । बालिकाका श्रीकृष्णके साथ खेलते हुए, उनका पूजन करते हुए, उनके साथ नृत्य करते हुए तथा ऐसे ही कृष्णभक्तिसे मुग्ध करनेवाले अनेक स्मरणीय चित्र इस ग्रंथमें दिए हैं ।

२. श्रीमती उमा अक्काद्वारा बनाए ये चित्र, इतिहासमें 'चित्रोंके माध्यमसे 'बालभाव'को अवर्णनीय पद्धतिसे व्यक्त करने'का एकमात्र उदाहरण हैं !

३. भक्तिमार्गके अंतर्गत कोई बालभावमें, तो कोई गोपीभावमें रहता है । पूरे दिन वे इसी भावमें रहते हैं । श्रीमती उमा अक्काकी विशेषता यह है कि वे चित्र बनानेतक ही बालभावमें रहती हैं । तत्पश्चात पारिवारिक और धर्मजागृतिका उत्तरदायित्व संभालते समय वर्तमान अवस्थामें रहती हैं । इसीलिए वे व्यष्टि (व्यष्टिगत) तथा समष्टि (समाजगत), दोनों प्रकारकी साधना कर सकती हैं । इसीलिए उनकी प्रगति शीघ्रतासे हो रही है । **– संकलनकर्ता**